उन्नतशील वैज्ञानिक गन्ना उत्पादन

परिचय

गन्ने की फसल एक नकदी फसल होने के कारण धनौरा जिला जे.पी. नगर, उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इस क्षेत्र में पिछले ५-६ वर्षों से चीनी कारखाने के कारण क्षेत्र में विकास एवं आर्थिक सम्पन्नता बढ़ी है एवं रोजगार के साधन भी उपलब्ध हुए हैं। सन् १९९८-९९ से इस क्षेत्र में औसत गन्ना उत्पादकता बढ़ी है, परन्तु अभी बहुत कार्य होना बाकी है। अगर गन्ने के उत्पादन में स्थिरता लानी है तो चीनी कारखाने एवं किसानों को एक जुट होकर वैज्ञानिक तरीकों से खेती करनी होगी तब ही इस क्षेत्र में गन्ने एवं किसानों का समेकित विकास हो पाएगा।

गन्ना विकास प्रणाली किसानों द्वारा गन्ना उगाने से लेकर चीनी कारखाने द्वारा गन्ने की सही खरीददारी, पिराई व चीनी बनाने तक सभी अवस्थाओं में लागू करनी पड़ेगी। उत्तम प्रजातियों का बीज उत्पादन एवं प्रयोग/प्रजातियों एवं क्षेत्र की जलवायु, भूमि, सिंचाई साधनों की उपलब्धता के अनुसार से चुनाव एवं सही सन्तुलन में प्रत्येक प्रजाति का उत्पादन, फसल का रोग एवं कीटों से संरक्षण, पेड़ी फसल की देखभाल, फसल चक्र, गन्ने के साथ अन्य फसलों की खेती, चीनी कारखाने द्वारा सही बिजाई कार्यक्रम, उन्नत तकनीकी का विस्तार तथा गन्ने में नये अनुसंधानों और विकास कार्यक्रमों में समय से तालमेल जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

स्वस्थ एवं उन्नत प्रजातियों के बीज उत्पादन एवं प्रयोग चीनी कारखाने की प्राथमिकता होनी चाहिए। गन्ने में कई प्रकार के कीट एवं रोग बीज द्वारा एक फसल से दूसरी फसल या एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में फैलते हैं। लाल सड़न, उकठा, कंड, घसैला रोग, पर्णदाह जैसे रोग बीज के द्वारा फैलते हैं। इस कारण बीज का प्रमाणीकरण करना अत्यंत आवश्यक है। प्रमाणित बीज से किसान ५ वर्ष तक अच्छा उत्पादन कर सकता है। नई प्रजातियों का मूल बीज प्रजनन पौध-शालाओं से ही लेना चाहिए। क्योंकि ये बीज रोग रहित एवं शुद्ध होता है।

एक या दो प्रजातियों को सम्पूर्ण क्षेत्र में लगातार नहीं उगाना चाहिए। इससे रोग एवं कीटों के प्रकोप का भय अधिक रहता है। इसके लिए २०-२५ प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल एक प्रजाति का नहीं होना चाहिए। किसी भी चीनी कारखाने को १५०-१८० दिन चलाने के लिए अगेती, मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों का सही अनुपात होना अत्यंत आवश्यक है। समय पर फसल सुरक्षा कार्यक्रम अपनाकर बीमारियों, कीट एवं खरपतवारों के द्वारा होने वाले हानि को बचाना आवश्यक होता है। ऐसा करने से गन्ने के उत्पादन एवं चीनी के पर्ता पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।